

११. समता की ओर

— मुकुटधर पांडेय

परिचय

जन्म: १८९५, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

मृत्यु: १९८९

परिचय: छायावाद के प्रतिष्ठित कवि मुकुटधर पांडेय जी ने १२ वर्ष की अल्पायु से ही लिखना शुरू कर दिया था। आपकी काव्य रचनाओं में मानव प्रेम, प्रकृति सौंदर्य, मानवीकरण, आध्यात्मिकता और गीतात्मकता के तत्त्व प्रमुखता से परिलक्षित होते हैं। आपने पद्य के साथ-साथ गद्य में भी पूरे अधिकार के साथ लिखा है। आपने निबंध और आलोचना ग्रंथ भी लिखे हैं।

प्रमुख कृतियाँ: 'पूजाफूल' 'शैलबाला' (कविता संग्रह), 'लच्छमा' (अनूदित उपन्यास), 'परिश्रम' (निबंध) 'हृदयदान', 'मामा', 'स्मृतिपुंज' आदि।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत कविता में कवि ने शिशिर ऋतु में पड़ने वाली अत्यधिक ठंडक से परेशान प्राणियों, साधन संपन्न एवं अभावग्रस्त व्यक्तियों के जीवनयापन का सजीव वर्णन किया है। कवि का कहना है कि धनवान और निर्धन दोनों भाई-भाई हैं। समाज में अमीरों को गरीब भाइयों की भलाई के बारे में अवश्य विचार करना चाहिए।

बीत गया हेमंत भ्रात, शिशिर ऋतु आई !
प्रकृति हुई दयुतिहीन, अवनि में कुंझटिका है छाई ।
पड़ता खूब तुषार पद्मदल तालों में बिलखाते,
अन्यायी नृप के दंडों से यथा लोग दुख पाते ।
निशा काल में लोग घरों में निज-निज जा सोते हैं,
बाहर श्वान, स्यार चिल्लाकर बार-बार रोते हैं ।
अर्द्धरात्रि को घर से कोई जो आँगन को आता,
शून्य गगन मंडल को लख यह मन में है भय पाता ।
तारे निपट मलीन चंद ने पांडुवर्ण है पाया,
मानो किसी राज्य पर है, राष्ट्रीय कष्ट कुछ आया ।
धनियों को है मौज रात-दिन हैं उनके पौ-बारे,
दीन दरिद्रों के मत्थे ही पड़े शिशिर दुख सारे ।
वे खाते हैं हलुवा-पूड़ी, दूध-मलाई ताजी,
इन्हें नहीं मिलती पर सूखी रोटी और न भाजी ।
वे सुख से रंगीन कीमती ओढ़ें शाल-दुशाले,
पर इनके कंपित बदनों पर गिरते हैं नित पाले ।
वे हैं सुख साधन से पूरित सुघर घरों के वासी,
इनके टूटे-फूटे घर में छाई सदा उदासी ।
पहले हमें उदर की चिंता थी न कदापि सताती,
माता सम थी प्रकृति हमारी पालन करती जाती ॥
हमको भाई का करना उपकार नहीं क्या होगा,
भाई पर भाई का कुछ अधिकार नहीं क्या होगा ।

— ० —

शब्द संसार

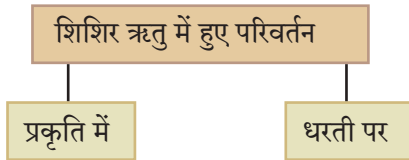
द्युतिहीन वि.(सं.) = तेजहीन
स्यार पुं.सं.(हिं.) = गीदड़, सियार

पांडुवर्ण पुं.सं.(सं.) = पीला रंग
पाला पुं.सं.(हिं.) = बर्फ, हिम

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कृति पूर्ण कीजिए :



(२) जीवन शैली में अंतर स्पष्ट कीजिए :

धनी	दीन-दरिद्र

(३) तालिका पूर्ण कीजिए :

ऋतुएँ	अंग्रेजी माह	हिंदी माह
१. वसंत	मार्च, अप्रैल	चैत्र, बैसाख
२. ग्रीष्म	-----	-----
३. वर्षा	-----	-----
४. शरद	-----	-----
५. हेमंत	-----	-----
६. शिशिर	-----	-----

(४) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंदीदा होने का कारण
५. रचना से प्राप्त संदेश

(५) अंतिम दो पंक्तियों से मिलने वाला संदेश लिखिए ।

उपयोजित लेखन

‘विश्वबंधुता वर्तमान युग की माँग’ विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।



C52619